

## SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)



ns k&fons kka ea fgnh Hkk"kk f' k{k.k ea 0; frjadh fo' y'sk.k dk egRo

ukx,M forku cfl y] शोधार्थी, भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग  
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

### ORIGINAL ARTICLE



### Corresponding Author

ukx,M forku cfl y] शोधार्थी,  
भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग  
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा,  
महाराष्ट्र, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 13/03/2023

Revised on : -----

Accepted on : 20/03/2023

Plagiarism : 03% on 13/03/2023



Plagiarism Checker X - Report  
Originality Assessment

Overall Similarity: **3%**

Date: Mar 13, 2023

Statistics: 112 words Plagiarized / 3895 Total words

Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.



'kks'k | kj

आजकल भाषा अध्ययन-अध्यापन अधिकांश शिक्षार्थियों में एक लोकप्रिय विषय है। दुनियाभर के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा ग्रहण करने के बाद द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा सीखते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी पद्धति की भूमिका का महत्व चर्चा करना है। शिक्षक को कोई भाषा जानने से ही शिक्षक को भाषा शिक्षण की क्षमता नहीं आती। आजकल पारंपरिक भाषा शिक्षण प्रविधियों के बदले आधुनिक शिक्षण प्रविधि और सामग्रियों का प्रयोग न करने तो शिक्षार्थियों में द्वितीय या विदेशी भाषा शिक्षण की उत्सुकता होते हुए भी छात्र अपने अपेक्षित उद्देश्य प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं। भाषा शिक्षण-अधिगम में आज भी पारंपरिक विधियों का ही प्रयोग किया जाता है जिनसे भाषा शिक्षण शिक्षार्थियों से दूर होता जा रहा है। व्यतिरेकी पद्धति के सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्तकर स्रोत और लक्ष्य भाषाओं के व्यतिरेकी स्थान पहचान कर उन्हीं के अनुसार शिक्षण प्रविधियों और सामग्रियों के निर्माण से द्वितीय या विदेशी भाषा शिक्षण कार्य सुचारु बनाया जा सकता है। इस शोध कार्य के लिए प्राथमिक और द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग किया गया जो त्रुटि विश्लेषण पद्धति के अनुसार विश्लेषण किया गया है।

eq; 'kCn

0; frjadh fo' y'sk.k] Hkk"kk f' k{k.k] f}rh;  
Hkk"kk] fons kh Hkk"kk] Hkk"kk dh =fV; kf

बहुभाषिकता का शब्द जब भी ज़बान पर आता है तब भारत के अलावा अन्य किसी भी देश का नाम याद नहीं आती। भारत में इतनी भाषिक भिन्नता होती है कि आज भी कोई भाषाविद् स्पष्ट नहीं बता सकते हैं कि भारत में कितनी भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। LIL एथनोलॉग<sup>1</sup> के आंकड़ों के अनुसार बताया जाता है कि

भारत में 415 जीवंत भाषाएँ व्यवहार में हैं। क्या यह भी स्वीकार किया जा सकता है या यह संख्या सही है? नहीं, यह भी विवादास्पद है। सन् 1949 में भाषा अधिनियम के 343 खंड के अनुसार हिन्दी राज भाषा के रूप में घोषित की गयी और साथ ही साथ अंग्रेजी को भी समानांतर भाषा का दर्जा 1965 तक दिया गया था। यह अंग्रेजी भाषा आजतक भारत में अपने स्थान कायम करके बैठी है। उसी की ही वजह भारतीय भाषाओं पर न केवल आघात पहुँचा, बल्कि भारतीयों में अपनी भारतीय भाषाओं में बोलना भी निम्न स्तरीय मानने की मानसिकता भी पैदा कर दी गयी।

भाषार्जन मानव जाति का स्वाभाविक और जन्मजात गुण होता है। कोई भी मनुष्य, समाज में जन्म लेता है वह, यदि गूंगा या बहरा न हो तो कोई न कोई भाषा का अर्जन करता है। लेकिन भाषा शिक्षण मानव द्वारा निर्मित प्रक्रिया है जो मानव द्वारा ही निर्मित कौशलों के माध्यम से मानव में विकसित किया जाता है।

मनुष्य समाज में जन्म होकर अपने परिवार तथा परिजनों से जो भाषा अर्जित की जाती है उसे मातृभाषा कहलाती है। अपनी जननी या माता की भाषा होने पर उसे मातृभाषा कहलाती हैं। मातृभाषा के विषय में यूनेस्को के द्वारा आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों की धारणा थी कि मातृभाषा आज भी व्यक्ति के लिए अपने समाज और संस्कृति के भीतर अपना स्थान ढूँढने और पाने का मुख्य साधन है, और साथ ही वह उसके बौद्धिक व्यापार का आधार भी है क्योंकि मातृभाषा व्यक्ति का आत्मसम्मान बढ़ाने के साथ-साथ सशक्त भावाभिव्यक्ति का माध्यम भी है। इसके अतिरिक्त सामाजीकरण, ज्ञानार्जन, शिक्षा की आधारशिला, सांस्कृतिक, चारित्रिक, नैतिक, मानसिक और बौद्धिक कौशल, सर्जनात्मक कौशल, दैनिक व्यवहारिक कार्यों का सहायक, राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय एकत्रीकरण और पौरुष का विकास का माध्यम मातृभाषा से ही होती है।

मातृभाषा के अर्जन के बाद छात्र किसी भी भाषा का अर्जन या शिक्षण करता है वह उसकी द्वितीय भाषा है जो देशी भाषा भी हो सकती है और विदेशी भाषा भी। द्वितीय भाषा अधिगम सामान्यतः औपचारिक स्थितियों में साक्षात् होता है परंतु अनौपचारिक अधिगम-परिस्थिति से भी अर्जित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ भारतवासी अपनी मातृभाषा अपनाने के बाद कई भारतीय भाषाएँ अर्जित करते हैं। संभवतः उन्हें उस भाषा में लिखना-पढ़ना नहीं आता होगा फिर भी मातृभाषा की तरह वार्तालाप कर सकते हैं। वैसे श्री लंकाई लोग मध्य-पूर्व देशों में नौकरी के लिए जाते हैं और लौटते वक्त वे अच्छी तरह हिन्दी-अरबी भाषाएँ बोलते हैं जो बिल्कुल मातृभाषी जैसा होता है। वहाँ श्रवण-भाषण सिद्धांत के अनुसार भाषार्जन होता है लेकिन उन्हें पढ़ना-लिखना नहीं आता है। वह उसके फलनेवाले संदर्भ पर निर्भर है। यदि भारत के संदर्भ में विश्लेषण करें तो किसी छात्र की मातृभाषा हिन्दी हो तो उसकी द्वितीय या तृतीय भाषा क्रमशः मराठी या पंजाबी होने की संभावना है। वे सभी भाषाएँ भारत की ही हैं लेकिन कोई छात्र हिन्दी के बाद जापानी, चीनी या जर्मन सीखे तो वह उसकी विदेशी भाषा होती है। संक्षिप्त यह बताया जा सकता है कि अध्येता मातृभाषा के बाद जो भाषा सीखता है वह उसकी द्वितीय भाषा है। भारतीय संदर्भ में भारतीय संविधान के अनुसार राजभाषा अधिनियम 1976 की सूची "ख" में घोषित वे चार राज्य जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब और चंडीगढ़ जहाँ के रहने वाले 80 प्रतिशत लोग हिन्दी जाननेवाले हैं। (आधुनिक हिन्दी शिक्षण व्यवस्था-2004 प्रो. महेन्द्र सिंह राणा) इन राज्यों की पाठशालों में हिन्दी द्वितीय भाषा के स्तर पर पढ़ायी जाती है। इसी संदर्भ में तृतीय भाषा का तात्पर्य है कि भारतीय संविधान के राजभाषा-अधिनियम 1976 की सूची "ग" में घोषित वे बीस राज्य जहाँ के रहनेवाले औसत 47.04 प्रतिशत लोग हिन्दी जाननेवाले हैं। (आधुनिक हिन्दी शिक्षण व्यवस्था-2004 प्रो. महेन्द्र सिंह राणा)

विदेशी भाषा वह होती है जिसकी व्यवहार मातृभाषा से इतर किसी अन्य देश में होती है और अलग संस्कृति-सभ्यता में फलती है। डॉ. गुरमकोंडा नीरजा विदेशी भाषा शिक्षण के उद्देश्य के संदर्भ में व्यक्त करती हैं कि आज के परिप्रेक्ष्य में अन्य भाषा शिक्षण का उद्देश्य मात्र द्वितीय भाषा के अध्येता को द्विभाषिक (Bilingual) बनाना नहीं बल्कि उसे द्विसंस्कृतिक (Bicultural) बनाना है। (अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की व्यावहारिक परख, पृ:67) विदेशी भाषा की सीमा चाहे समुद्र या ज़मीन से अलग पहचानी जा सकती है। इतना कहने पर वह विदेशी भाषा नहीं हो सकती क्योंकि भाषा की प्रकृति में भी विदेशीपन का होना आवश्यक है। देश की भिन्नता होने पर देशों की भाषाएँ यदि

मिलती-जुलती है तो उन्हें विदेशी भाषा नहीं कही जा सकती। कनाडा, अमेरिका, न्यूजीलैंड, ब्रिटेन या आस्ट्रेलिया भूमि से अलग है फिर भी उन सब की भाषा अंग्रेजी एक ही है। वैसे भारत, फ़िजी, गुयाना और मॉरीशस अलग-अलग देश है लेकिन हिन्दी या भारतीय भाषाएँ उन देशों में विदेशी भाषा नहीं है। इसलिए भाषा के विदेशीपन का अनुमान भाषा के मूल में निहित संस्कृति और उससे अनुप्राणित विविध भाषाई व्यवस्थाओं से लगाया जा सकता है इसलिए देशी अन्य भाषा तथा विदेशी भाषा में पर्याप्त अंतर है।

भारत के संदर्भ में हिन्दी को भारत की राज भाषा का दर्जा मिला है। भारत में प्रचलित हिन्दीतर अन्य सभी भाषाओं की तुलना में हिन्दी भाषा के बोलने तथा समझने वालों की संख्या सर्वोपरि है। सन् 2011 जनगणना के अनुसार भारत में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या 43.63 प्रतिशत है इसलिए हिन्दी भारत की अंतर्प्रान्तीय भाषा या अलग-अलग राज्यों की जनता एक माला में फ़िरोनी वाली संपर्क भाषा मानी जाती है। इतना ही नहीं, हिन्दी पूरे भारत की जनता को एकता की भावना से एक दूसरे के साथ बाँधने वाली भाषा है। यही हिन्दी भाषा आजकल दुनिया में सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषाओं के प्रथम तीन भाषाओं के बीच पहुँच रही है इसलिए दुनियाभर व्याप्त भारतीय और अभारतीय लोग भी हिन्दी अध्ययन-अध्यापन कार्य में निरत हैं। दुनियाभर के विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं में अहिन्दी भाषी या अभारतीय विद्वान हिन्दी की सेवा तथा प्रचार-प्रसार में कार्यरत हैं। इन देशों में श्री लंका, जर्मनी, इटली, बुल्गारिया, उसबेकिस्तान, जापान, चीन, स्वीडन, अमेरिका, थाइलैन्ड कुछ गिने-चुने उदाहरण हैं।

भारत में हिन्दी शिक्षण पर दृष्टिपात करें तो भारत के मातृभाषी क्षेत्रों में हिन्दी शिक्षण-अधिगम में कोई परेशानी नहीं है, लेकिन अहिन्दी तथा विदेशों में हिन्दी शिक्षण के साथ विश्लेषणीय परेशानियाँ द्रष्टव्य हैं। भारत में हिन्दी भाषा का क्षेत्र "क", "ख" और "ग" रूप में वर्गीकरण किया गया है। "क" क्षेत्र हिन्दी मातृ भाषी क्षेत्र के रूप में माना जाता है जहाँ के सभी कार्य हिन्दी भाषा में ही सम्पन्न होते हैं। "ख" क्षेत्र के किसी भी सरकारी कार्य में उस क्षेत्र की मातृभाषा का मुख्य स्थान रहता है और हिन्दी का प्रयोग दूसरे स्थान पर होता है। "ग" क्षेत्र के सरकारी कार्यों में अपने क्षेत्र की भाषा मुख्य होती है और अंग्रेजी द्वितीय स्थान पर और हिन्दी तीसरे स्थान पर काम करती है।

इस क्षेत्रीय भिन्नता के संदर्भ में हिन्दी शिक्षण-अधिगम कार्य के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि "क" क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण-अधिगम कार्य में भाषागत समस्याएँ सबसे कम हैं क्योंकि उस क्षेत्र की प्रत्येक लिखित-पठित सामग्री की उपलब्धि हिन्दी में होती है और श्रवण-भाषण भी हिन्दी के ही माध्यम से ही होता है। "ख" तथा "ग" क्षेत्रों के संदर्भ में परिस्थिति अलग है क्योंकि उनके श्रवण-भाषण और वाचन-लेखन सामग्री तत् क्षेत्र की मातृभाषा से मिलती है और हिन्दी में कम। इस क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण में व्यतिरेकी स्थान अधिक पाए जाते हैं क्योंकि मातृभाषा के शिक्षण के बाद दूसरी भाषा का शिक्षण होता है तब दोनों भाषाओं के संबंध पर व्यतिरेकी समस्या खड़ी होती है इसलिए शिक्षण-अधिगम कार्य में शिक्षकों को भाषा शिक्षण पर अधिक सावधान रहना पड़ता है।

विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण में यह संदर्भ पूर्ण रूप से परिवर्तन होता है। विदेशी शिक्षार्थियों की मातृभाषा अलग, द्वितीय भाषा अलग और विदेशी भाषा उन्हें एक नवीनतम अनुभव है। भाषाविज्ञान में माना जाता है कि मातृभाषी का वागयंत्र उसकी अपनी मातृभाषा के अनुसार ही सृजन होता है। यदि ये अवयव किसी द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा की ओर प्रशिक्षित कराने हैं तो विशेष प्रयत्न से उन भाषाओं के सही उच्चारण के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण देने पड़ते हैं जिसके लिए शिक्षक को अधिक प्रयत्न करना पड़ता है। मातृ या द्वितीय भाषा के बाद जब कोई भी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन होता है तो उसे व्यतिरेकी सिद्धांत पर ही आगे बढ़ना पड़ता है। व्यतिरेकी पद्धति का निर्माण भाषा शिक्षण के परिप्रेक्ष्य में ही हुआ है और आज इसकी आवश्यकता न केवल विदेशी भाषा शिक्षण में बल्कि मातृभाषा तथा द्वितीय भाषा शिक्षण में भी उपयोग किया जा सकता है।

भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी पद्धति की भूमिका पर ध्यान अवगत कराना द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी या अन्य विदेशी भाषाएँ अध्ययन-अध्यापन करनेवाले सभी शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों को उपयोगी सिद्ध होगी। व्यतिरेकी विश्लेषण का अंग्रेजी में Contrastive Analysis कहा जाता है लेकिन यह शब्द अंग्रेजी के साथ तुलना करते

हुए विद्वानों ने इसे भेदार्थी व्याकरण (Differential Grammar) और व्यतिरेकी व्याकरण (Comparative Grammar) भी कहा था।

व्यतिरेकी पद्धति की आवश्यकता तब हुई थी जब द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था। इस समय विश्वयुद्ध के लिए अनेक देशों के सैनिक अमेरिका आए थे जो अलग-अलग भाषाएँ बोलते थे और वे सब एक ही भाषा की छत्र छाया में लाने की आवश्यकता पड़ी थी। उसके लिए सभी को भाषा शिक्षण की संभावना देख रहे थे और भाषाओं के व्यतिरेकी या आसमान स्थलों को पहचानकर उनपर अधिक ध्यान देते हुए अनौपचारिक शिक्षण प्रक्रिया चालू की थी तभी से इसका श्रीगणेश हुआ था। बढ़ती भाषा शिक्षण की माँग ने व्यतिरेकी पद्धति का विकास द्रुत गति से आगे बढ़ा दी। व्यतिरेकी पद्धति की यह असमानता का अस्तित्व हमेशा दोनों वस्तुओं के बीच में होता है लेकिन भाषा शिक्षण में वियतिरेकी दो वस्तुएँ वे हैं जो दो भाषाएँ। इसी पद्धति के आधार पर दोनों भाषाओं के शिक्षण की असमानताओं का अध्ययन और उसीके आधार पर भाषाओं की त्रुटियों का विश्लेषण किया जाता है।

भाषाओं के बीच की भिन्नताओं के अध्ययन पर कई विद्वानों ने काम किया था जिनमें से बुर्फ नामक विद्वान का नाम भिन्नताओं के तुलनात्मक अध्ययन की परिचर्चा के विषय में सर्वप्रथम उभर आता है। बुर्फ के नाम के साथ द्विभाषिकता पर प्रारम्भिक अध्ययन और शोध काम करने वाले विद्वानों के रूप में हागेन और वडनरिख (1953) के नाम भी लिए जाते हैं, लेकिन व्यतिरेकी अध्ययन को सैद्धांतिक रूप प्रदान करनेवाले का श्रेय भाषा विद रॉबर्ट लेडो (1945) को जाता है साथ ही साथ अमेरिकी भाषाविद रॉबर्ट लेडो और चालर्स सी फ्रिज द्वारा संपादित "Linguistic across culture" पुस्तक ने व्यतिरेकी अध्ययन पद्धति को व्यवस्थित रूप दे दिया था। यह व्यतिरेकी अध्ययन क्षेत्र का मौलिक ग्रंथ भी मना जाता है। इसके प्रकाशन के लगभग दो वर्ष के बाद "Centre for applied linguistics of the modern language association" की स्थापना वाशिंगटन में की गयी जिसके द्वारा अंग्रेजी के साथ विभिन्न भाषाओं की संरचना के व्यतिरेकी स्थलों के आधार पर पुस्तकों की शृंखला निकाली गयी है। इसके बाद क्रमशः वियतिरेकी विश्लेषण का काम यूरोप तथा अन्य देशों तक फैल गया है। भारत में द्रष्टव्य परिभाषाओं से ही जाना जा सकता है कि इस विषय के प्रति भारतीयों की उत्सुकता कितनी मात्रा में है। इससे संबंधित भारतीय भाषाविदों में से प्रो. सूरज भान सिंह, एम.जी. चतुर्वेदी, डॉ. शंकर बुन्देल, डॉ. ललित मोहन बहुगुणा, डॉ. कविता रस्तोगी और सुबोध कुमार सिंह आदि के नाम सर्वोपरि हैं।

इस विषय पर प्रो. सूरज भान सिंह का मन्तव्य है कि ध्वनि, लिपि, व्याकरण, शब्द, अर्थ, वाक्य और संस्कृति जैसे भिन्न-भिन्न स्तरों पर दो भाषाओं की संरचनाओं की परस्पर तुलना करके उनमें समान और आसमान तत्वों का विश्लेषण करना व्यतिरेकी विश्लेषण कहलाता है।<sup>2</sup>

डॉ. कविता रस्तोगी अपनी परिभाषा देते हुए बताती है कि व्यतिरेकी विश्लेषण से किन्ही दो भाषाओं के विविध स्तरों पर पाए जाने वाली सम-विषमता का गहन अध्ययन उत्पन्न विषमताओं को दूर करने का प्रयत्न वियतिरेकी विश्लेषण कहलाता है।<sup>3</sup>

विद्वानों तथा उनकी परिभाषाओं और वक्तव्यों के विश्लेषण से बोध होता है कि व्यतिरेकी विश्लेषण की संभावना दो भाषाओं के संदर्भ में ही संभव है और विशेषतः भाषा शिक्षण और अनुवाद कार्य में इसकी उपयोगिता सर्वोपरी है। इस पद्धति में दोनों भाषाओं के बीच ध्वनि, पद और वाक्य के स्तर पर समान-असमानताओं का विश्लेषण किया जाता है। शिक्षण-अधिगम में अध्येता स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की तुलना के आधार पर लक्ष्य भाषा के कौशलों का अपनाया जाता है तभी वह स्रोत और लक्ष्य भाषाओं के समान स्थलों का आसानी से अर्जन करता है और आसमान स्थलों में अटक जाता है। भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी पद्धति के अनुसार शिक्षण में प्रयुक्त श्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के बीच के असमान स्थलों के अध्ययन करके शिक्षक पाठ्यक्रम तथा पाठ्य सामग्री का निर्माण करते हैं।

भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी स्थलों की पहचान से शिक्षण-अधिगम कार्य की सफलता प्राप्त नहीं किया जा सकता। पहचान किये गए व्यतिरेकी स्थलों के अनुसार पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री तथा शिक्षण विधियों को विकसित किया जाना चाहिए तभी अपेक्षित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। व्यतिरेकी सिद्धांत के विद्वानों ने

अध्येता से होने वाली त्रुटियों के विभिन्न प्रकार प्रस्तुत किये हैं:

1. व्यवहार संदर्भित त्रुटियाँ।
2. अज्ञान संदर्भित त्रुटियाँ।
3. अंतर भाषा संदर्भित त्रुटियाँ।<sup>4</sup>

इस शिक्षण प्रक्रिया के अनुसार हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण में उपर्युक्त तीन विधियों के आधार पर विश्लेषण करके भाषा का शिक्षण वैज्ञानिक और औपचारिक रूप में किया जा सकता है जिससे शिक्षार्थी भाषा अधिगम कार्य से दूर नहीं होते। पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि आधुनिक परिस्थिति में इसकी उपयोगिता न केवल विदेशी भाषा के लिए अधिक होती है बल्कि मातृभाषा और द्वितीय भाषा अधिगम में भी इसका महत्व अधिक है। विद्यार्थी निरायास मातृभाषा का अर्जन कर लेते हैं लेकिन उन्हें मातृभाषा कॉलेज या विश्वविद्यालय में औपचारिक और वैज्ञानिक स्तर पर पढ़ाया जाती है तब अनेक व्यतिरेकी स्थलों की समस्या आती है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण में कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। हिन्दी भाषा के अनुस्वार-अनुनासिकता, नुक्ता का प्रयोग, उत्क्षिप्त व्यंजन, कर्ता कारक “ने” का प्रयोग, लिंग और वाच्य इत्यादि कई व्याकरणिक कोटियाँ हैं जो छात्र भाषार्जन में ग्रहण करते हैं लेकिन औपचारिक हिन्दी शिक्षण में इसके विषय में पूछने पर वे अटक या भ्रम में पड़ जाते हैं।

भाषा शिक्षण में विदेशों में हिन्दी का मानक या शुद्ध रूप पढ़ाया जाता है। लेकिन कई बार भाषण में यह सुनने आता है कि हिन्दी मातृ भाषियों में भी पारिवारिक भाषा या बोलियों के प्रभाववश मानकेतर हिन्दी का प्रयोग भाषण में होता है जो शिक्षार्थी ग्रहण करते हैं। विशेषतः विदेशी शिक्षार्थी ग्रहण करते हैं और मानते हैं कि यह हिन्दी भाषी ही करते हैं इसलिए सही है। हिन्दी भाषी विभिन्न संदर्भों में “मैं” की जगह “अपुन”, शहर, महल, कहना शब्दों के “ह” का उच्चारण sheher, mehel, khena है लेकिन shahar, mahal, kahana के रूप में उच्चारण करते हैं। “मुझे, तुझे” आदि जगहों में “मेरे को, तेरे को” जैसे मानकेतर प्रयोग करते हैं।

द्रविड भाषा परिवार के अध्येताओं को हिन्दी तथा अन्य भारतीय आर्य भाषाओं के शिक्षण में शिक्षक को अधिक सतर्क रहना पड़ता है। इन दोनों परिवारों की भाषाओं की व्याकरणिक कोटियों में काफी भिन्नताएँ होती हैं इसलिए इसके शिक्षण में व्यतिरेकी पद्धति के त्रुटि विश्लेषण की सहायता अधिक ली जा सकती है। तमिल भाषा की वर्णमाला और हिन्दी या मराठी वर्णमाला के उच्चारण तथा वर्णों में अधिक अंतर होते हैं। तमिल भाषी का वागयंत्र उनकी अपनी भाषा के अनुसार व्यवस्थित है जो अन्य भारतीय भाषा के लिए परिवर्तन या प्रशिक्षित करने में अधिक परिश्रम और अभ्यास करना पड़ता है। हिन्दी भाषा के पदक्रम और दक्षिण भारतीय भाषाओं के पदक्रम में भिन्नताएँ अधिक हैं। हिन्दी वाक्य में सहायक क्रिया देखने को मिलती है लेकिन दक्षिण भारतीय भाषाओं में यौगिक है इसलिए दक्षिण भारतीय भाषाओं में सहायक क्रिया की अभिव्यक्ति की कोई कमी नहीं इसलिए दक्षिण भारतीयों को भाषा शिक्षण में सहायक क्रिया के प्रयोग संबंध में शिक्षक को सतर्क रहना पड़ता है।

नान वीट्टक्क पोखिरेन।(तमिल)

मैं घर जाता हूँ। (हिन्दी)

दोनों वाक्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि दोनों में अधिक अंतर है। हिन्दी वाक्य के अंत में “हूँ” सहायक क्रिया है फिर भी तमिल वाक्य में ऐसा प्रयोग नहीं है। वैसे तमिल वाक्य में “वीट्टक्क” शब्द में “घर को” का अर्थ होता है लेकिन हिन्दी व्याकरण के अनुसार इस प्रकार का प्रयोग नहीं है। हिन्दी लेखन और भाषण में “पुस्तकालय को, घर को या पाठशाला को” बोलते या लिखते नहीं, लेकिन ‘को’ का अर्थ उसमें छिपा हुआ है। एक ही परिवार या देश में होकर भी भारतीय भाषाओं में भी आपस में अधिक भिन्नताएँ पायी जाती हैं जो भाषाओं के ध्वनि, पद और वाक्य स्तर पर अधिक हैं इसलिए मातृभाषा, द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा के रूप में भाषा शिक्षण के समय अधिक सावधान और सतर्क रहकर शिक्षण-अधिगम कार्य करना चाहिए जिसके लिए शिक्षकों को भाषाविज्ञान के व्यतिरेकी विश्लेषण की जानकारी की आवश्यकता है।

भाषा शिक्षण में त्रुटि विश्लेषण में व्युत्पन्न संदर्भित त्रुटियों का तात्पर्य है यह त्रुटि व्याकरण के अज्ञान या अव्यक्त के कारण से ही नहीं होती वरन् भाषा के प्रयोग के समय असावधानी या जल्दबाजी की वजह होती है। किसी से याद दिलाने या बताने के बाद अध्येता अपने आप समझ लेता है और ठीक भी कर लेता है। उदाहरणार्थ श्री लंका के हिन्दी अध्ययन करनेवाले अधिकांश विद्यार्थी हिन्दी बोलते समय "मैंने फल लाये" "मैं चाय पीया" वाक्य बोलते हैं। लेकिन इंगित करने पर अपनेआप सही करके "मैं फल लाया हूँ" और "मैंने चाय पी" बोलते हैं।

अज्ञान संदर्भ त्रुटियों को गलतियाँ ही कही जा सकती है, क्योंकि द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी अध्ययन करनेवाले शिक्षार्थियों से संस्कृति संबंधित प्रयोग, भाषा संबंधित प्रयोग तथा सामाजिक स्तर से संबंधित त्रुटियाँ अज्ञानवश करते हैं। उदाहरणार्थ व्यक्तियों के साथ आप, तुम, तू का गलत प्रयोग करते हैं। हिन्दी भाषा के लिंग पहचानने की क्लिष्टता हेतु पुरुषवाची संज्ञा के साथ स्त्रीवाची क्रिया तथा स्त्रीवाची संज्ञा के साथ पुरुषवाची क्रिया का प्रयोग करते हैं। वैसे भी "ने" कारक चिह्न का प्रयोग गलत जगहों में किया जाता है।

अशुद्ध प्रयोग	शुद्ध प्रयोग
बहन पाठशाला जाता है।	बहन पाठशाला जाती है।
भाई खाना खाती है।	भाई खाना खाता है।
मैंने चाय पी चुका।	मैं चाय पी चुका/चुकी।
मैंने समझा।	मैं समझा/समझी।

अंतर भाषा संदर्भित त्रुटियाँ व्यतिरेकी पद्धति का वास्तविक क्षेत्र माना जाता है। अध्येता के भाषा व्यवहार में स्रोत भाषा का प्रभाव नितांत लक्ष्य भाषा पर पड़ता है जो लक्ष्य भाषा की शोभा नष्ट करता है। यह अध्येता की वास्तविक त्रुटियाँ हैं जो गत्यात्मक होती हैं। शिक्षक का कर्तव्य है कि इन्हीं के आधार पर अपनी शिक्षण सामग्रियों का निर्माण करना। श्री लंकाई शिक्षार्थी हिन्दी के व्यवहार करते समय बहुधा चारों कौशलों में यही गलतियाँ करते हैं। विशेषतः भाषण, वाचन और लेखन पर अधिक द्रष्टव्य हैं। उदाहरणार्थ उल्लेख किया जा सकता है कि हिन्दी वर्णमाला का उच्चारण सिंहली वर्णमाला की तरह करना, महाप्राणों का अल्पप्राणों की तरह उच्चारण करना, शब्दों के उच्चारण पर सिंहली का प्रभाव, वाक्य सॉचों में हिन्दी सॉचों की जगह सिंहली सॉचों का प्रभाव और अर्थ और संदर्भ जाने बिना समरूपी शब्दों का प्रयोग आदि प्रमुख त्रुटियों के स्थल हैं। हिन्दी "ऋ" स्वर का उच्चारण हिन्दी में "रि" (ri) करके किया जाता है लेकिन सिंहली के प्रभावश उसका उच्चारण "रु" (ru) करके किया जाता है। वैसे भी हिन्दी के शब्दांत "अ" का उच्चारण हलंत के रूप में किया जाता है लेकिन सिंहली में ऐसा नियम नहीं इसलिए सिंहली के प्रभाववश हिन्दी के हलंत की जगह सिंहली की तरह स्वरांत करके उच्चारण करते हैं। श्री लंकाई शिक्षार्थियों को हिंदी भाषा शिक्षण के समय इस प्रकार की अधिक त्रुटियाँ और व्यतिरेकी स्थल देखने को मिलते हैं जिनका समाधान व्यतिरेकी पद्धति परिप्रेक्ष्य में किया जा सकता है।

हिन्दी उच्चारण	सिंहली उच्चारण
वृक्ष (vriksh)	वृक्ष (vruksha)
युद्ध (yu(d)dh)	युद्ध (yuddha)

व्यतिरेकी विश्लेषण से शिक्षक द्वारा स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के ध्वनि, पद और वाक्य से संबंधित वियतिरेकी स्थलों के पहचानने के बाद ही उनके निवारण हेतु उचित शिक्षण विधियों, पाठ्य सामग्रियों तथा पाठ्य उपकरणों का निर्माण किया जा सकता है।

दुनिया में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषाओं में हिन्दी प्रथम तीन स्थानों पर है लेकिन हिन्दी के लिए दुनियाभर सर्वमानित वैधता की मापन विधि नहीं है। जैसे अंग्रेजी की वैधता मापन के लिए टोफेल (TOFEL) और आईईएलटीएस (IELTS) होती हैं जिनसे छात्र की अंग्रेजी क्षमता को दुनिया के कहीं भी जाए मान्यता प्राप्त होती है। फिलहाल इसके अलावा आजकल सभी पाश्चात्य तथा अन्य भाषाओं की वैधता Common European Framework for Language Teaching and Assessing के आधार पर मापी जाती है और क्षमता के आधार पर भाषा

का स्तर A1, A2, B1, B2, C1, C2 दिया गया है जो दुनियाभर माना जाता है। It's based on 6 levels called A1 and A2 (elementary) B1 and B2 (intermediate) and CA and C2 (advanced).

किसी भी भाषा की वैधता के लिए इस प्रकार का मापन विधि होने से उस भाषा को दुनियाभर वैधता मिलती है जिससे न केवल उस भाषा के शिक्षार्थियों को भी वैधता मिलती है बल्कि भाषा को भी। हिंदी भाषा के लिए भी इस प्रकार का मापन योजना हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

fu"d"kl

निष्कर्षतः यह बताया जा सकता है कि भाषा शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में नवीनता लाना आवश्यक है क्योंकि वर्तमान में भी अधिकांश भाषा शिक्षण संस्थाओं में पारंपरिक शिक्षण प्रविधियों का ही प्रयोग है जिससे भाषा शिक्षण—अधिगम में नीरसता आती है। उसके निवारण हेतु स्रोत और लक्ष्य भाषा के व्यतिरेकी स्थानों को पहचानना जरूरी है। उसके आधार पर यह जाना जा सकता है शिक्षार्थी भाषा के किन—किन स्थानों में त्रुटियाँ करते हैं और त्रुटियों का कारण क्या है। इन त्रुटियों का निवारण किस प्रकार किया जा सकता है। पहचानने के बाद उसी के अनुसार पाठ्य सामग्री और प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए। इस नवीन शिक्षण—अधिगम से शिक्षार्थियों के श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन कौशलों को निर्धारित समय में अपेक्षित स्तर पर लाया जा सकता है। इससे छात्र भाषा शिक्षण से दूर होने के बदले छात्रों को कक्षाओं में लाया जा सकता है।

I nHkz I ph

1. *Ethnologue: Languages of the World* (stylized as *Ethnologue*) is an annual reference publication in print and online that provides statistics and other information on the living *Languages of the world*. <https://hi.wikipedia.org/wiki/>
2. चतुर्वेदी, शिवम, व्यतिरेकी भाषाविज्ञान की उपयोगिता एवं महत्व, (शोध आलेख) 31 मार्च 2022।
3. वही।
4. सिंह, दिलीप (2010) *अन्य भाषा शिक्षण के वृहत संदर्भ*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली—110095।
5. कुमार अरुण (2008) *हिन्दी शिक्षण*, आर लाल बुक डिपो, मेरठ 25001।
6. श्रीवास्तव रवींद्रनाथ (2005), *भाषा शिक्षण*, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 110002।
7. शर्मा एस्. आर (2008) *भाषा शिक्षण*, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002।
8. नारंग, वैशना (2009) *संप्रेषणपरक*, हिन्दी भाषा शिक्षण, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली 110002।
9. यादव, नरेश कुमार (2009) *आधुनिक हिन्दी शिक्षण*, वायु एजुकेशन ऑफ इंडिया, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
10. राणा महेंद्रसिंह, (2004) *आधुनिक हिन्दी शिक्षण व्यवस्था*, हर्ष प्रकाशन, आगरा।
11. नीरजा, मुरमकोंडा (2015) *अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख*, वाणी प्रकाशन, 4695, 21—ए, दरियागंज, नई दिल्ली 10002।
12. योगेंद्रजी, भाई (?) *हिन्दी भाषा शिक्षण*, अग्रवाल पब्लिकशन्स, ज्योति ब्लॉकस, संजय प्लेस, अगरा—02।
13. <https://www.coe.int/en/web/common-european-framework-reference-languages/level-descriptions>

\*\*\*\*\*